श्री जैन शारदा-महालक्ष्मी पूजन
दीपमालिका पूजन-विधि

1. स्नान करके शुद्ध वस्त्र पहन कर पूजा करें।

2. पूजन के उपकरण-धूप बत्ती, धूपदान, अखण्ड दीपक, पान, मौली, पंचामृत-दही, दूध, घी, मिश्री और केसर मिलाकर कलश तैयार कर लें। अक्षत, सुपारी और केसर आदि सभी एक थाली में संचय करके रख लें।

3. दवात को मांजकर नई स्याही भरें।

4. नई पेन/कलम लें।

5. पूजन करते समय भगवान महावीर स्वामी, श्री गौतम स्वामी, शारदा और लक्ष्मी का चित्र बाजोट पर पूर्व या उत्तर में स्थापित करें।

6. शुभ मुहूर्त्त में नई बहियों, कलम, दवात को किसी चौकी या पाटे पर पूर्व या उत्तर की ओर स्थापित करें।

7. इस पाटे के दाहिने ओर घी का दीपक और बायीं ओर धूप या अगरबत्ती रखें।

8. पूजन करने वालों के दाहिने हाथ की ओर दवात, नई कलम रखे। बहियों को तीन नवकार गिनकर लच्छा बांधे।

9. पूजन करने वालों को तीन नवकार गिनते हुए दाहिने हाथ की कलाई में मौली बांधें। फिर एक नवकार पढ़ते हुए कलम के भी मौली बांधें।

10. दीपावली पर्व पर उपवास, आयंबिल, एकासना आदि तप करें।

11. आतिशबाजी आदि का उपयोग नहीं करें। इससे महान् कर्मबंधन होता है। अतः यह सर्वथा त्याज्य है।

12. कुमारिका द्वारा सर्वपूजकों के कपाल पर कुंकुम का तिलक कर अक्षत लगावें।

नई बही के प्रथम पाने में सर्वप्रथम ॐ अर्हम् नमः लिखें। फिर एक से लेकर नौ, 9 आकारों में एक श्री से प्रारम्भ कर 9 श्री तक लिखें, इससे श्री का शिखर बन जाएगा। उसके नीचे रोली (कुंकुम) का 卐 (स्वस्तिक) बनायें, फिर उसके आजू-बाजू में शुभ लाभ इस प्रकार लिखें -

॥ॐ अर्हम् नमः॥

श्री

श्री श्री

श्री श्री श्री

श्री श्री श्री श्री

श्री श्री श्री श्री श्री

श्री श्री श्री श्री श्री श्री

श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री

श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री

श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री

8	3	4
1	5	9
6	7	2

शुभ 卐 लाभ

फिर बही में लिखना प्रारम्भ करें :-

॥श्री महावीर स्वामिने नमः॥
॥श्री गुरू गौतम स्वामिने नमः॥
॥श्री जिनदत्त-चन्द्र-कुशल-चन्द्र गुरूभ्यो नमः॥
॥श्री सद्गुरूभ्यो नमः॥
॥श्री सरस्वत्यै नमः॥
श्री गुरूगौतमस्वामीजी जैसी लब्धि हो
श्री केसरियाजी जैसा भरपूर भंडार हो
श्री भरत चक्रवर्ती जैसी ऋद्धि हो
श्री बाहुबली जी जैसा बल हो
श्री अभयकुमार जी जैसी बुद्धि हो
श्री कयवन्नाजी सेठ जैसा सौभाग्य हो
श्री धन्ना शालिभद्रजी जैसी सम्पत्ति हो
श्री श्रेयांसकुमारजी जैसी दानवृत्ति हो
श्री जिनशासन की प्रभावना हो।
श्री वीर सं. 2541 श्री विक्रम सं. 2072 मिति कार्तिक वदि 30 बुधवार
तारीख 11-11-2015 को श्री महालक्ष्मी देवी का पूजन शुभ मुहूर्त्त में किया।

बाद में स्वस्तिक पर नागरबेल का पान, लौंग, सुपारी, इलायची, रूपा नाणा आदि रखें। फिर अखंड जलधारा बही के चारों ओर देकर पू. गुरूदेव का अभिमंत्रित वासक्षेप, अक्षत, पुष्प, कुसुमांजलि हाथ में लेकर चोपड़ा के ऊपर कुसुमांजलि करें।

श्री शारदा (सरस्वती) पूजन-विधि

निम्नलिखित श्लोक एवं तत्पश्चात् मंत्र बोलें -

मंगलं भगवान् वीरो, मंगलं गौतमप्रभुः।
मंगलं स्थूलिभद्राद्या, जैन धर्मोस्तु मंगलम् ॥

मंत्र- ॐ आर्यावर्ते अस्मिन् जम्बूद्वीपे भरतक्षेत्रे दक्षिणार्ध भरते मध्यखण्डे भारत देशे ..... नगरे ममगृहे श्री शारदादेवी आगच्छ आगच्छ तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा।

आह्वान-ॐ श्री शारदा देवी, मम गृहे आगच्छ आगच्छ स्वाहा ।

स्थापना- ॐ श्री शारदा देवी, मम गृहे तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा।

संनिधान- ॐ श्री शारदा देवी, मम सानिध्यं कुरू कुरू स्वाहा, अत्र पूजां बलिं गृहाण गृहाण स्वाहा।

यह कहकर हाथ में ली हुई कुसुमांजलि चढ़ावें।

इस प्रकार स्तुति करने के पश्चात् श्री शारदा देवी की पूजन करें :-

पंचामृत पूजा- ॐ ह्रीँ श्री भगवत्यै केवलज्ञान स्वरूपायै लोकालोक-प्रकाशिकायै हंसगामिन्यै श्री सरस्वत्यै पंचामृतं समर्पयामि स्वाहा।

(पंचामृत का छांटणा करें)

जल पूजा- ॐ ह्रीँ श्री भगवत्यै केवलज्ञान स्वरूपायै लोकालोक-प्रकाशिकायै हंसगामिन्यै श्री सरस्वत्यै जलं समर्पयामि स्वाहा। (जल छांटणा करें)

चन्दन पूजा- ॐ ह्रीँ श्री भगवत्यै केवलज्ञान स्वरूपायै हंसगामिन्यै लोकालोक-प्रकाशिकायै श्री सरस्वत्यै चन्दनं गन्धं समर्पयामि स्वाहा । (चन्दन के छांटणा करें)

पुष्प पूजा- ॐ ह्रीँ श्री भगवत्यै केवलज्ञान स्वरूपायै लोकालोक-प्रकाशिकायै हंसगामिन्यै श्री सरस्वत्यै पुष्पं समर्पयामि स्वाहा। (पुष्प चढ़ायें)

धूप पूजा- ॐ ह्रीँ श्री भगवत्यै केवलज्ञान स्वरूपायै लोकालोक-प्रकाशिकायै हंसगामिन्यै श्री सरस्वत्यै धूपं समर्पयामि स्वाहा। (धूप करें)

दीप पूजा- ॐ ह्रीँ श्री भगवत्यै केवलज्ञान स्वरूपायै लोकालोक-प्रकाशिकायै हंसगामिन्यै श्री सरस्वत्यै दीपं समर्पयामि स्वाहा। (दीप करें)

अक्षत पूजा- ॐ ह्रीँ श्री भगवत्यै केवलज्ञान स्वरूपायै लोकालोक-प्रकाशिकायै हंसगामिन्यै श्री सरस्वत्यै अक्षतं समर्पयामि स्वाहा। (अक्षत चढ़ायें)

नैवेद्य पूजा- ॐ ह्रीँ श्री भगवत्यै केवलज्ञान स्वरूपायै लोकालोक-प्रकाशिकायै हंसगामिन्यै श्री सरस्वत्यै नैवेद्यं समर्पयामि स्वाहा। (नैवेद्य चढ़ायें)

फल पूजा- ॐ ह्रीँ श्री भगवत्यै केवलज्ञान स्वरूपायै लोकालोक-प्रकाशिकायै हंसगामिन्यै श्री सरस्वत्यै फलं समर्पयामि स्वाहा। (फल चढ़ायें)

अर्घ्य पूजा- ॐ ह्रीँ श्री भगवत्यै केवलज्ञान स्वरूपायै लोकालोक-प्रकाशिकायै हंसगामिन्यै श्री सरस्वत्यै अर्घ्यं सर्वोपचारान् स्वाहा। (बाकी सब वस्तु चढ़ायें)

इस प्रकार द्रव्य पूजन करने के पश्चात् क्षमापना करें, बाद में श्री सरस्वती स्तोत्र का पाठ करें।

श्री सरस्वती स्तोत्र

तर्ज-हे नाथ तेरे चरणों...

हे शारदे मां हे शारदे मां।
हमें तार दे मां हे शारदे मां ।।
है रूप तेरा उज्ज्वल समुज्ज्वल।
सावन-सा रिमझिम गंगा-सा निर्मल।
जीवन का उपवन संवार दे मां,
हे शारदे मां.....।।१।।
अम्बर से विस्तृत चंदा-सी शीतल।
तुमसे प्रकाशित है सारा भूतल।
अमृत की बूंदें दो-चार दे मां,

हे शारदे मां.....।।२।।
मूरख भी पंडित गूंगा भी वक्ता।
तेरी कृपा से क्या हो न सकता।
अपनी कृपा को विस्तार दे मां,
हे शारदे मां.....।।३।।
साधु भी श्रावक भी तुमको ही ध्यावे।
तेरी अमी से निज भान पावे।
मणिप्रभ को वात्सल्य की धार दे मां,
हे शारदे मां.....।।४।।
उपर्युक्त स्तोत्र बोलने के बाद एक थाली में दीपक और कपूर जागृत करके आरती उतारें।

श्री सरस्वती माता की आरती

जय जय आरती माता तुम्हारी।
आलोकित हो बुद्धि हमारी।।1।।
कर में वीणा पुस्तक सोहे।
धवल कमल सिंहासन मोहे।।2।।
तुझ चरणों में आरती अर्पण।
निर्मल बुद्धि देना हर मन।।3।।
मात सरस्वती के गुण गाउँ।
'मणि' चिन्तामणि विद्या पाउँ।।4।।
फिर इस अष्टक का पाठ करें –

श्री गुरु गौतम स्वामी का अष्टक

अंगूठे अमृत वसे, लब्धि तणा भंडार।
श्री गुरु गौतम सुमरिये, वांछित फल दातार।।दोहा।।
त्रिपदी प्राप्त भगवंत से, द्वादश अंग विचार।
रचना क्षण इक में करे, गुरु गौतम जयकार।।1।।
दीक्षा दी जिसको उसे, केवल हुआ श्रीकार।
बोधिदान में कुशल वर, गुरू गौतम जयकार।।2।।
निज लब्धि से ही चढ़े, अष्टापद सुखकार।
बोधे जृंभक देव को, गुरु गौतम जयकार।।3।।
पन्द्रहसौ तापस तपे, दे प्रतिबोध उदार।
एक पात्र से पारणा, गुरु गौतम जयकार।।4।।

वीर प्रभु निर्वाण सुन, मंथन मनन अपार।
पाई केवल संपदा, गुरु गौतम जयकार।।5।।
जो चाहो सुख संपदा, इष्ट सिद्धि संसार।
सुबह शाम नित नित करो, गुरु गौतम जयकार।।6।।
चरणों में मैं नित करूँ, वंदन विधि अनुसार।
इष्ट सिद्धि वांछित फले, गुरु गौतम जयकार।।7।।
गौतम स्वामी को नमो, जाप करो हर बार।
'मणि' मन वंदन भाव से, गुरु गौतम जयकार।।8।।

उपर्युक्त गौतम अष्टक बोलने के बाद पूर्व या उत्तर दिशा सम्मुख होकर धूप-दीप करके एकाग्रचित्त से निम्नलिखित सरस्वती मंत्र की एक माला गिनें।

श्री सरस्वती मंत्र

ॐ ह्रीँ क्लीं श्रीं ह्रीँ ऐं सरस्वत्यै नमः

।।श्री महालक्ष्मी पूजन-विधि।।

श्री महालक्ष्मीजी मूर्ति, सिक्का, सोना, चांदी इत्यादि पूजन के लिए चांदी की थाली में बहुमान से स्थापित की जानी चाहिए।

मन्त्र और विधि

आह्वान- दो हाथ जोड़कर अनामिका अंगुली के मूल-पर्व को अंगूठे से जोड़ने से आह्वान मुद्रा होती है। इस मुद्रा से यह मंत्र बोलकर आह्वान करें-

1. ॐ आर्यावर्ते अस्मिन् जम्बूद्वीपे भरतक्षेत्रे दक्षिणार्द्धभरते मध्यखण्डे भारत देशे.....नगरे..... मम गृहे ॐ आँ क्रौं ह्रीँ महालक्ष्मि! चन्द्रमुखे! सौभाग्यदायिनी! अक्षयभांडागार-भरपूरणि। मम ऋद्धिं सिद्धिं सुख-संपत्तिं कुरु कुरु अत्र आगच्छ आगच्छ स्वाहा।

स्थापना- दोनों हथेलियों को नीचे की ओर उल्टा करने से स्थापन मुद्रा होती है। इस मुद्रा में यह मंत्र बोलें-

2. ॐ आर्यावर्ते अस्मिन् जम्बूद्वीपे भरतक्षेत्रे दक्षिणार्द्धभरते मध्यखण्डे भारत देशे.....नगरे..... मम गृहे ॐ आँ क्रौं ह्रीँ महालक्ष्मि! चन्द्रमुखे! सौभाग्यदायिनी। अक्षयभांडागार-भरपूरणि! मम ऋद्धिं सिद्धिं सुख-संपत्तिं कुरु कुरु अत्र पूजने तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा।

3. ॐ आर्यावर्ते अस्मिन् जम्बूद्वीपे भरतक्षेत्रे दक्षिणार्द्धभरते मध्यखण्डे भारत देशे.....नगरे..... मम गृहे ॐ आँ क्रौं ह्रीँ महालक्ष्मि! चन्द्रमुखे! सौभाग्यदायिनी। अक्षयभांडागार-भरपूरणि! मम ऋद्धिं सिद्धिं सुख-संपत्तिं कुरु कुरु पूजाबलिं गृहाण गृहाण स्वाहा।

अब महालक्ष्मी देवी का पूजन करें :

1. **जल पूजा**– ॐ आँ क्रौं ह्रीँ महालक्ष्मि ! चन्द्रमुखे! सौभाग्यदायिनी! अक्षयभाण्डागारभरपूरणि! मम ऋद्धिं सिद्धिं सुख संपत्तिं कुरु कुरु जलं गृहाण गृहाण स्वाहा ।।

2. **गंध पूजा**– ॐ आँ क्रौं ह्रीँ महालक्ष्मि! चन्द्रमुखे! सौभाग्यदायिनी! अक्षयभाण्डागारभरपूरणि! मम ऋद्धिं सिद्धिं सुख संपत्तिं कुरु कुरु, गंधं गृहाण गृहाण स्वाहा ।।

3. **पुष्प पूजा**– ॐ आँ क्रौं ह्रीँ महालक्ष्मि! चन्द्रमुखे! सौभाग्यदायिनी! अक्षयभाण्डागारभरपूरणि! ऋद्धिं सिद्धिं सुख संपत्तिं कुरु कुरु पुष्पं गृहाण गृहाण स्वाहा।

4. **धूप पूजा**– ॐ आँ क्रौं ह्रीँ महालक्ष्मि! चन्द्रमुखे! सौभाग्यदायिनी! अक्षयभाण्डागारभरपूरणि! मम ऋद्धिं सिद्धिं सुख संपत्तिं कुरु कुरु धूपं गृहाण गृहाण स्वाहा।।

5. **दीप पूजा**– ॐ आँ क्रौं ह्रीँ महालक्ष्मि! चन्द्रमुखे! सौभाग्यदायिनी! अक्षयभाण्डागारभरपूरणि। मम ऋद्धिं सिद्धिं सुख संपत्तिं कुरु कुरु दीपं गृहाण गृहाण स्वाहा।।

6. **अक्षत पूजा**– ॐ आँ क्रौ ह्रीँ महालक्ष्मि! चन्द्रमुखे! सौभाग्यदायिनी! अक्षयभाण्डागारभरपूरणि! मम ऋद्धिं सिद्धिं सुख संपत्तिं कुरु कुरु अक्षतं गृहाण गृहाण स्वाहा।।

7. **नैवेद्य पूजा**– ॐ आँ क्रौं ह्रीँ महालक्ष्मि! चन्द्रमुखे! सौभाग्यदायिनी! अक्षयभाण्डागारभरपूरणि। मम ऋद्धिं सिद्धिं सुख संपत्तिं कुरु कुरु नैवेद्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।

8. **फल पूजा**– ॐ आँ क्रौं ह्रीँ महालक्ष्मि! चन्द्रमुखे! सौभाग्यदायिनी! अक्षयभाण्डागारभरपूरणि! मम ऋद्धिं सिद्धिं सुख संपत्तिं कुरु कुरु फलानि गृहाण गृहाण स्वाहा।।

9. **वस्त्र पूजा**– ॐ आँ क्रौं ह्रीँ महालक्ष्मि! चन्द्रमुखे! सौभाग्यदायिनी! अक्षयभाण्डागारभरपूरणि। मम ऋद्धिं सिद्धिं सुख संपत्तिं कुरु कुरु वस्त्रं गृहाण गृहाण स्वाहा।।

हाथ जोड कर बोलें–

नीर–गन्धाक्षतै र्पुष्पै–नैवेद्यैर्धूप–दीपकैः। फलैरर्घ्यं च अर्चामि, सर्वकार्यसुसिद्धये॥

पुष्पांजलि (समर्पित करना)

शान्तिः शान्तिकरः स्वामी, शान्तिधारां प्रवर्षति।
सर्व–लोकस्य शान्त्यर्थं, शान्तिधारां करोम्यहम्।।
जाति–चम्पकमालाद्यै – र्मोगरैः पारिजातकैः।
यजमानस्य सौख्यार्थे, सर्वविघ्नोपशान्तये।।

इस प्रकार द्रव्य पूजा के पश्चात् एक थाली में दीपक और कपूर जागृत करके आरती उतारनी चाहिए।

महालक्ष्मी माता की आरती

ओम जय लक्ष्मी माता, हो देवी जय लक्ष्मी माता।
संकट मेरे हर दो, झोली मेरी भर दो, पाउँ सुखशाता ।।टेर।।
रखवाली तुम जिन शासन की, संघ सकल ध्यावे।
पहली आरती सिद्धि, दूजी सुख पावे।।1।।
छम–छम पायल घुंघरूँ बाजे, स्वर्ण कमल रचना।

पंखुड़ी शोक निवारे, घर बंधे पलना।।2।।
सूरि मंत्र है मंत्र शिरोमणि, महालक्ष्मी सेवा।
आरती श्रद्धा भावे, पावत शिव मेवा।।3।।
महर करो हे लक्ष्मी माता, आशिष दु:ख हरे।
घर आंगन में पधारो, भक्त पुकार करे।।4।।
आरती लक्ष्मी वंदन पूजन, ऋद्धि सिद्धि आवे।
मणिमय संपद् पावे, तन मन हरसावे।।5।।

इसके बाद मंत्र बोले :-

कर्पूरपूरेण मनोहरेण, सुवर्णपात्रान्तर-संस्थितेन।
प्रदीप्तभासा सह संगमेन, नीरांजनं ते जगदम्ब! कुर्वे।।

।। ॐ श्रीं ह्रीँ क्लीं श्री महालक्ष्म्यै नमः ।।

तत्पश्चात् अक्षत और फूल लेकर कुबेर का पूजन करके कलश के ऊपर चढ़ावें।

आह्वामि देव! त्वाम् इहा याहि कृपां कुरु।
कोष-वर्द्धये नित्यं, त्वम् परिपक्ष सुरेश्वर।।
धनाध्यक्षाय देवाय, नरयानोपवेशिने।
नमस्ते राजराजाय, कुबेराय महात्मने।।

फिर काँटा-बाट हो तो तराजू में स्वस्तिक करके फूल चढ़ावें और काँटें पर नींबू लगावें।

नमस्ते सर्वदेवानां, शांतित्वे सत्यमाश्रिता।
साक्षिभूता जगद्धात्री, निर्मिता विश्वयोनिना।।

पूजन में अज्ञानतावश कोई दोष लगा हो, उसके लिए निम्नलिखित श्लोक पढ़ते हुए क्षमायाचना करनी चाहिए।

क्षमायाचना

आज्ञाहीनं क्रियाहीनं, मंत्रहीनं च यत्कृतम्।
तत्सर्व क्षम्यतां देवि, प्रसीद! परमेश्वरि।।1।।
आह्वानं नैव जानामि, न जानामि विसर्जनम्।
पूजाऽर्चां नैव जानामि, क्षमस्व परमेश्वरि ।।2।।
अपराधासहस्राणि, क्रियन्ते नित्यशो मया।
तत्सर्वं क्षम्यतां देवि, प्रसीद! परमेश्वरि।।3।।

इन श्लोकों द्वारा क्षमायाचना करें।

इति पूजनविधि

इस प्रकार पूजन करने के बाद अनाथ, अपंग, निराश्रित लोगों को यथाशक्ति द्रव्यादिक का दान करना चाहिए और साधर्मिक भाइयों की यथाशक्ति भक्ति का लाभ लेना चाहिए।

दीपावली के जाप

1. ॐ ह्रीँ श्रीं महावीरस्वामी नाथाय नमः

प्रथम प्रहर में इस मंत्र का जाप करना चाहिए।

2. ॐ ह्रीँ श्री महावीरस्वामी सर्वज्ञाय नमः

दूसरे प्रहर में इस मंत्र का जाप करना चाहिए।

3. ॐ ह्रीँ श्रीं महावीरस्वामी पारंगताय नमः

तीसरे प्रहर में इस मंत्र का जाप करना चाहिए।

4. ॐ ह्रीँ श्रीं गौतमस्वामी-केवलज्ञानाय नमः

अंतिम प्रहर में इस मंत्र का जाप करना चाहिए।

इस मंत्र की 20 माला सूर्योदय से पहले चौथे प्रहर में फेरनी चाहिये। बाद में मंदिर में दर्शन-चैत्यवंदन एवं लड्डू चढ़ाने आदि की विधि करें।

तत्पश्चात् गुरुदेव को वन्दन करना चाहिए तथा उनके मुखारविन्द से सप्त स्मरण व श्री गौतमरास को एकाग्रतापूर्वक श्रवण करना चाहिए।

आशीर्वाद- **पूज्य गणाधीश उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.**

संयोजन- **आर्य मेहुलप्रभसागरजी म.**